25-8-68 ओम् शान्तिः प्रातः क्लास

अ== अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने मे कोई तकलीफ नही है। कोई धुटका नही खाना है। इसको कहा जाता है सहज याद। पहले-2 अपने को आत्मा समझना है। आत्मा ही शरीर धारन कर पार्ट बजाती है। संस्कार सभी आत्मा मे रहते है। आत्मा तो स्वतन्त्र है। बाप कहते है कि अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह नालेज अभी तुमको मिलती है। फिर नही मिलेगी। तुम्हारा यह शान्तिः मे बैठना दुनियां नही जा इसको कहा जाता है नैचरल शान्तिः आत्मा ऊपर से आई है इस शरीर दवारा पार्ट बजाती रहती है। हम वास्तव मे वही के रहने वाले है। यह बुधी मे ज्ञान है। इसमे जबरदस्ती, हठ आदि की कोई बात नही। बिलकुल सहज है। अभी यहां आत्मा को सजाना है। परन्तु पवित्र बनने बिना जा नही सकते है। पवित्र बनने लिये ही परमात्मा बाप को याद करना है। याद करते-2 पाप भस्म हो जावेगे। तकलीफ की कोई बात नही। लेकर भी अगर जाओ तो पैदल ही तो भी तुम बाप को सहज याद कर सकते हो। अभी याद से ही तुम बच्चो को पवित्र बनना है। वहां पर वो तो है ही पवित्र दुनियां। वहां पवित्र दुनियां मे इस ज्ञान की दरकार नही है। वहां पर ऐसे नही कहेगे। क्योकि वहां पर तो विकर्म होते ही नही है। वहां तो तुम नैचरली चलते हो जैसे कि कि यहां पर चलते हो। फिर थोडा नीचे उतरते हो। ऐसे नही है कि वहां पर भी कोई तुमको प्रैक्टिस करनी होती है। यह प्रैक्टिस तुम को अभी करनी है। बैटरी चार्ज करनी है। फिर आहस्ते-2 बैटरी को डिसचार्ज होना ही है। बैटरी चार्ज होने का ज्ञान अभी एक ही बार तुमको मिलता है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने मे तुमको कितना समय लग जाता है। शुरु से लेकर कुछ ना कुछ बैटरी कम होती ही जाती है। मूलवतन मे तो है ही आत्मा शरीर है ही नही। तो नीचे उतरने अर्थात बैटरी कम होने की बात ही नही। मोटर जब चलेगी तो ही बैटरी कम होगी। मोटर खडी होगी तो बैटरी थोडी ही यूज होगी। मोटर जब चलेगी तो ही बैटरी चालू होगी। तुम भी यहां पर शरीर मे आकर करते हो तो फिर थोडी-2 बैटरी कम होती है। पहले तो समझना है कि वो है सुप्रीम फादर। जिसको ही सभी आत्मायें याद करती है। हे भगवान, हे ईश्वर कहते है ना। वो बाप है हम बच्चे है। यहां तुम बच्चे हो, समझाया है कि बैटरी कैसे चार्ज करनी है। घूमो फिरो बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेगे। कोई भी बात नही समझो तो पूछ सकते हो। है बिलकुल ही सहज। हर 5000वर्ष बाद हमारी बैटरी डिसचार्ज होती है फिर बाप आकर सबकी बैटरी चार्ज कर देते है। विनाश के समय सभी ईश्वर को याद करते है। अभी बाढ हुई तो भक्त तो जो थे वो भगवान को ही याद करते होगे। परन्तु उस समय तो भगवान भी यद आ नही सकता है। मित्र सम्बन्धी धन दौलत आद याद आ जाता है। भल है भगवान कहते है वो भी सिर्फ कहने ही मात्र। भगवान का ज्ञान तो है ही नही। हम उनके बच्चे है यह तो जानते ही नही है। उनको तो उल्टा ज्ञान मिलता है। बाप तो आकर सुल्टा ज्ञान देते है। भक्ति मे तो डिपार्टमैन्ट ही अलग है। उसमे तो ठोकरे खानी होती है। ब्रहमा की रात सो ब्राहमणो की रात। ब्रहमा का दिन माना ही ब्राहमणो का दिन। ऐसे तो नही कहेगे कि शुद्रो का दिन रात। यह राज बाप ही बैठ समझाते है। यह है वेहद की रात वेहद का दिन। अभी हम दिन के तरफ जाते है। रात पूरी होती है। यह शास्त्रो मे है ब्रहमा का दिन ब्रहमा की रात। परन्तु समझते तो नही है ना। तुम्हारी बुधी अभी वेहद मे चली गई है। ब्रहमा का दिन ब्रहमा की रात। यूं तो देवताओं का भी कह सकते है। विष्णु का दिन विष्णु की रात। क्योकि ब्रहमा और विष्णु का सम्बन्ध भी समझाया है। त्रिमूर्ती का आक्यूपेशन क्या है। और कोई समझ ही नही सकता है। तुम बच्चो की बुधी मे है वो तो भगवान को ही ठिक्कर-2 मे कच्छ-मच्छ मे ले गये है। तो गोया उनकी आत्मा कच्छ का शरीर छोड कर फिर भल बनेगी। फिर और फलाना बनेगी। जन्ममरण मे ही ले गये है। यह समझानी तो वास्तव मे मनुष्यो के लिये ही है। यह राधा कृष्ण आदी सभी मनुष्य है परन्तु दैवी बुधी वाले। अभी तुमको ऐसा बनना है। दूसरे जन्म मे देवता बन जावेगे। 84 जन्मो का जो हिसाब चित्र था सो अब पुरा हुआ। फिर रीपीट होगा। 84जन्मो के बाद ही तुम को यह शिक्षा मिलती है। बाप कहते है मीठे-

बच्चो अपने को आत्मा समझो। समझते भी है कि हम तो पाँइधारी है। परन्तु हम आत्मायें ऊपर से कैसे आती है वो नही समझते है। अपने को देह-धारी समझ लेते है। हम आत्मा ऊपर से आये है फिर जावेगे कबऊपर जाना पाना ही मरना। शरीर छोडना। मरना कौन चाहेगा। यहां तो बाप ने कहा है कि तुम तो इस शरीर को भी भूल जाओ। जीते जी मरना तुमको सिखाते है। जो और कोईसिखा नही सकता है। तुम आते ही हो अपने घर पर जाने लिये। घर कैसे जाना है यह ज्ञान अभी मिलता है। तुम्हारा यह अन्तिम जन्म यहां मृत्यु लोक मे है। अमरलोक सतयुगको कहा जाता है। अभी तुम बच्चेचा की बुधी मे है कि हम जल्दी-2 जावे। पहले तो घर मे मुक्तिधाम जाना पडा। हम आत्माकैसे पार्ट बजानेआये है फिर कैसे जाना है। यह भी बुधी मे तो होना चाहिये नां। यह कपडे यहां परही छोडने है। फिर आत्मा चली जावेगी अपने घर2 जैसे हद के नाटक होते है। नाटक पुरा हुआ तो यह कपडे वहीही पहन कर घर मे जाते है। अभी तुम बच्चो को भी परमान है कि यहां सतयुगमे तो बहुत ही थोडे देवता होते है। यहां पर तो कितने मनुष्य हैअणगिनत। वहां पर तो होगा ही एक आ, स, दे, दे, धर्म। परन्तु अभी तो यह हिन्दु कह देते है। अपने श्रेष्ट धर्म को कर्म को भूले है तबही दुःख हुआ है। सतयुग मे तो तुम्हारा श्रेष्ट धर्म श्रेष्ट कर्म था। बुधी मे आता है कि हम कैसे गिरे है। तभीप्र धान बुधी होने कारण 84के बदले 84 लाख कह देते है। फिर परमात्मा को ठिक्कर-भित्तर मे भी कह देते है। बाप कहते है कि तुम कितने पत्थर बुध्धी बन गये हो। स्कूल मे कोई ठीक तरह से नही पढ़ते है तो कहते है नां कि तुम तो मोटी ठिक्कर बुधी हो। यहां फिर है बेहद की बात। तुम ो बेहद के बापका परिचय देते हो। बेहद का बाप ही आकर इस दुनियां को स्वर्ग करते है। कहते है मनमनाभव। यह गीता के ही अक्षर है। सहज राजयोग का ज्ञानपर नाम रख दिया है गीता। अभी है तुम्हारी पाठशाला। बच्चे आकर पढ़ते है। तुम कहेगे कि हमारे तो बाबा की पाठशाला है। जैसे किसी बच्चे का बाप प्रिन्सीपल होगा तो कहेगा हम अपने बाप की कालेज मे पढ़ते है। उनकी मां भी प्रिन्सीपल होगी तो भी कहेगे कि हम अपने ममांबाबा दोनो ही प्रिन्सीपलो के स्कूल मे पढ़ते है। हमारे मां-बाप का कालेज है। तुमभ्वी कहेगे कि हमारे मां-बाप की यह पाठशाला है। दोनो ही पढ़ाते है। तुम इनको ममां भी कह सकते हो। ऐसे नही कि ममां चली गई तो नही पढ़ाती है। जैसे बाप-दादा मिला हुआ है वैसे ही ममां बाबा भी मिला हुआ है। दोनो ने ही यह रूहानी यूनिवर्सिटी खोली है। दोनो ही पढ़ाते है। एडाप्ट किया है नां। वो तो थी छोटी ममां। यह है बडी। जिसे ही एडाप्ट करते है। छोटी को भी एडाप्ट किया है नां। यह बहुत गुहय ज्ञान की बाते है। बाप कोई नही नई बात नही समझाते है। यह तो कल्प-2 समझाई है नां। कि हां इतनी नालेज है कि उसमे गुहयता आती जाती है। बापकहते है मै तुमको गुहयतम ज्ञान सुनाता हूं। आत्मा की ही समझानी तो देखो अभी तुमको कैसे मिलती है। इतनी छोटी सी पिचकरी आत्मा है। उसमे ही इतना 84जन्मो का पार्ट भरा हुआ है। वो कब विनाश नही होता। 84 जन्मो का पार्ट अविनाशी है। कितनी गुहयतम नालेज है। वण्डर ही कहे और क्या। यह पार्ट कब विनाश नही होता। इसको अविनाशी ही कहा जाता है। आत्मा अविनाशी है। इसमे फिर 84 का पार्ट भी अविनाशी है। आत्मा ही 84 जन्म भोगती है नां। बुलाती है कि हे फलाने ईधर आओ। आत्मा ने कहां। आत्मा ने कानो दवारा सुना। अपने को आत्मा ही समझो। तुम आत्मायें यहां आकर पार्ट बजाती हो शरीर दवारा। शरीर है तो पार्ट है। शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो जवाब भी नहीमिलता है। अभी बाप कहते है कि बच्चे तुम ो वापस जाना है। जब यह पुरुषोतम सुगम युग आता है तो ही वापस जाना होता है। इसमे पवित्रता ही मुख्य चाहिये। शान्तिः धाम मे भी पवित्र आत्मायें ही जाती है। शान्तिः और सुखधाम दोनो ही पवित्र धाम है। वहां शरीर है नही। आत्मा पवित्र है। वहां बैटरी डिशर्चाज होती नही है। यहां पर शरीर धारण करने पर मोटर चलती है तो बैटरी कम होती जावेगी। मोटर नही चलेगी तो बैटरीकम

होगी? अभी तुम्हारी आत्म की ज्योति बहुत कम हो गई है। एकदम बुझ नही जाती है। जब कोई मरता है तो दीवा जलाते है। फिर उसकी बहुत ही सम्भाल रखते है। आत्मा की ज्योति कब भी बुझती नही है। वो तो अविनाशी है। यह सभी बाते बाप ही बैठ समझाते है। बाप जानते है बहुत ही लवली बच्चे है। यह सभी काम चिखा पर बैठ कर जल भस्म हो गये थे। अभी फिर उनको जगावेगे। बिलकुल ही तमोप्रधान मूर्दे बन गये है। बाप को जानते ह नही है। मनुष्य कोई काम का नही रहा है। मनुष्यकी मिटी काम की थोडी ही होती है। ऐसा नही कि बडे आदमियो की मिटी कोई काम की है गरीबो की नही। मिटी तो मिटी मे ही मिल जाती है। फिर भल कोई भी हो। कोई जला देते है। कोई तो कब्र मे बन्द कर देते है। पारसी लोग कुऐ पर रखते है। फिर पक्षी लोग मास खा लेते है। बाकी हडिडयाँ जाकर नीचे पड़ती है। वो भी काम मे आती है। दुनियां मे जो ढेर मनुष्य मरते है ढेर ही हडियां निकलती है अभी तुमको अपने आप ही शरीर को छोडना है। तुम यहां आये ही हो यह शरीर छोड कर घर जाने अर्थात मरने के लियेतुम खुशी से जाते हो। जानते हो कि हम फिर जीवनमुक्ति मे जावेगे। जिन्होने जो पार्ट बजाया है अन्त तक वो ही बजावेगे। बाप पुरुषार्थ कराते रहेगे। साक्षी होकर देखते रहेगे यह तो समझ की बाते है। इसमे डरने की भी बात नही है। हम स्वर्ग मे जाने लिये आप ही पुराने शरीर को छोड देते है। बाप को भी याद करते रहना है। जो ही अन्त मते सो गते हो जावे। इसमे ही मेहनत है। हर एक पढाई मे मेहनत लगती है। भगवान को आकर पढ़ाना जरूरी पढ़ता है। जरूर बडी ही पढ़ाई होगी जो कि भगवान पढ़ाते है। इसमे दैवी गुण भी चाहिये यह लक्ष्मन बनना है। यह सतयुग मे थे। अभी फिर तुम सतयुगी देवता बनने आये हो। ऐसा आः तो कितनी सहज है। त्रिमूर्ती मे क्लीयर है। यह ब्रहमा विष्णु आद के ही चित्र नां होते तो समझाते कैसे? ब्रहमा सो विष्णु विष्णु सो ब्रहमा। ब्रहमा की आठ भुजा दस भुजा सो भुजोय दिखाते है। क्योकि ब्रहमा से ही कितने ढेर बच्चे होते है। तो उन्होने फिर वो चित्र बना दिया है। बाकी मनुष्य कोई इतनी भुजाओं वाला होता थोडे ही है। रावण के दस सिरो का भी अर्थ है। बाकी मनुष्य कोई ऐसे होते थोडे ही है। यह बाप ही बैठ समझाते है। मनुष्य तो कुछ भी नही जानते है। यह खेल है। यह कोई को भी पता नही है कि कब से शुरु हुआ है। परमपरा कह देते है। और वो भी कब से? तो मीठे-2 बच्चो को बाप बैठ पढ़ाते है। वो टीचर भी है तो गुरु भी है। तो बच्चो को कितनी खुशी होनी चाहिये। यह म्यूजियम आद तुम किसके डायरेक्शन से खोलते हो। यहां तो है ही मां बाप और बच्चे। ढेर बच्चे है। डायरेक्शन पर खोलते रहते है। इनको देखना क्या है। एक देखा माना दस देखा। इम्परुमेन्ट करते जाते है। मै भी ला क्या जा कर करुगां। बाबा कोई से बात तो करते नही है। कहते है तुम कहते हो भगवानोवाच:- एक दवारा। तो भगवा को हमको सा० कराओ। अरे तुमने आत्मा का सा० किया है? इतनी छोटी सी बिन्दी उनका तुम सा० क्या करेगे। जरुरत नही है। यहां तो आत्मा को जानना होता है कि आत्मा भृकुटी के बीच मे रहती है। जिसके आधार पर ही इतना बडा शरीर दुम्ब चलता है। आत्मा अपना पार्ट बजाती है। अभी तुम्हारे पास नां ही लाईट का नां ही रत्न जडित ताज है। दोनो ही ताज लेने लिये फिर पुरुषार्थ कर रहे है। कल्प-2 तुम बाप से वर्सा लेते हो। बाबा पूछते है कि आगे कवमिले होगा बाबा कल्प-2 मिलते है। क्यो? यह लक्ष्मन बनने लिये। बस सभी एक ही बात बोलेगे। बाप कहते है कि अच्छा है शुभ तो बोलते हो। अब फिर पुरुषार्थ करो। सब तो नर से नारायण नही बनेगे। प्रजा भी तो चाहिये नां। कथा भी होती है तो सत्य नारायण की। वो लोग कथा तो सुनते है परन्तु बुधी मे कुछ भी नही आता है। तुम बच्चे तो अब समझते हो कि वो है शान्तिः धाम। निराकारी दुनियां। फिर वहां से जावेगे सुखधाम। सुखधाम मे ले जाने वाला एक ही बाप है। सन्यासी तो सिर्फ शान्तिः धाम तक ही जाने की शिक्षा देते है। सहज राजयोग के ज्ञान का इन बिचारो को मालूम भी नही है। तुम कोई को भी समझाओ तो बोलो कि अब घर वापस जाना है। इसलिये बाप को याद करो। तुम ही बुलाते हो कि आओ आकर लिबरेट करो। अब बाप आये है उनको जानते नही। जानकर याद कर पुरा वर्सा लो। अ-